चंद्रकान्ता
उपन्यास
(चारो भाग)
बाबू देवकीनन्दन खन्नी रचित

लहरी बुक डिपो
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता
काशी
सस्त्र संस्करण
भूमिका

[ प्रथम संस्करण से ]

ब्राह्म हिन्दी के बहुत से उपन्यास हुए हैं जिनमें कई तरह की बातें की राजनीति भी हिली गई है, राजदरबार के सरकारों के सामने भी बाहर किए गए हैं, मगर राजदरबारों में ऐयार ( चालाक ) भी नौकर हुआ करते थे जो कि हरफ-मौला बाले सुरत बदलना, बहुत सी दवाओं का जानना, गाना करना, तैयार, शब्द चलाना, बांसों का काम देना, नौकर बहुत ही बातें जानने करते थे। जब राजदरबारों में लड़ाई होती थी तो वे लोग ब्राह्मणों के बीच यूजुन गिराये वो पलटन्दों को जाने गवाये लड़ाई खत्म कर देते थे। इन लोगों की बड़ी कठिनाई की जाती थी। इन्हीं ऐयारों पर ब्राह्म कह बहुत रूपये दिखाई देते थे। वे सब गुरु तो इन लोगों में रहे नहीं सिर्फ शक्ति बदलना रह गया वह भी किसी काम का नहीं। इन ऐयारों का बयान हिन्दी किताबों में ब्राह्मभी तक मेरी नजरी नहीं रही गुजरा। ब्राह्म हिन्दी अभी पढ़ने वाले हिन्दी मजे की नैसर्गिक लें, तो कई बालों का फायदा है। सबसे ज्यादा फायदा हो यह है कि पैरीही किताबों को पढ़ने वाला बहुत फिसले ही में न पड़ेगा। इन सब बालों का ख्याल करने वाले यह "वन्द्रकान्त" नामक उपन्यास लिखा। इस किताब में नौगत यो विशेष बहुत
दो पहाड़ी राजवाड़ों का हाल कहा गया है। इन दोनों राज-वाड़ों में पहिले आपका खुदे मेह रहना, फिर वहीं के लड़के दो महर्षियों के द्वारा से बिखाई होना, नौसिका के कुमार वीर-राजसिंह का विजयगाम की राजमहारानी चंद्रकान्ता पर आधिक हो कर वहाँ उठाना, विजयगाम के दीवान के लड़के क्रूसिंह का महाराज वर्धसिंह से बिखाई कर जुनार जाना और चंद्रकान्ता की तारीफ़ करने वाले के राजा शिवदत्तसिंह की उमाई जाना बारह। इस बीच में ऐसी भी अच्छी तरह से दिलाई गई है और वे राजा पहाड़ी होने से इसमें पहाड़ी नदियों दरों महामक चंगलों और धार से हो दिलचस्प घाटियों का भी वायन अच्छी तरह से आया है।

मैंने आप झूठ की किताब नहीं लिखी है, यह पहिला बाइरोश्च कि यह वायन अच्छा है, इसलिए इसमें किसी तरह की गलती या मूर्खों का ही नहीं होना वाला नहीं होने के कारण है हम अपनी सेवा में अपनी लोगों के भाव में अपने लोगों के साथ मागत हैं, वहीं करके मेहरानती होगी आप आप होगी तरह से मेरी भूख को पता होगा भला पर जाहिर करना क्योंकि वह सबीम बहुत बढ़ा है आपने आप हुए रहा है, मूल मालम हो जाने से दूसरी जिल्दों में उसका खयाल किया जायगा।

[ आयात समत् ४१४ ]

देवकीनन्दन हसनी
(२)

लखनी की जम्मू संवत १६१८ आप्रवाश कुश्चि सत्तमी शनिवार की मुक्तफ़पुर में हुया। आपकी माता पृथ्वी (मुक्तफ़पुर) के राजस भादुः की महान राज्य की पुत्री थी। विवाह के उपरांत लखनी के पिता लखना दस्तजीव कुश्चि वर्ष तक पृथ्वी और मुक्तफ़पुर में ही रहे और इसके पावन कार्य के लिए रहे।

बादः देवकीनन्दनी के बाल्काल के अविकाश वर्ष जुलूशपुर में ही व्यथित हुए और कुश्चि होश समझने वाले आप पिता के पास कार्य रहे। बाल्काल में आपने निवास में फारसी तथा उर्दू के माध्यम से विस्तृत प्राप्ति की। कार्य करने पर आपने हिंदी, अंगरेज़ी तथा संस्कृत का अध्ययन किया।

गया जिला के दिकारी राज्य में लखनी के पिता का आपारिक सम्बन्ध था। इसी कारण आपने गया में एक कोटी की। गयाजी की कोटी में लखनी वस्तम प्रवचन करते, वहाँ आपकी छात्री आप्त भी थी।

लखनी जोर जोर स्वतंत्र थी। गयाजी में आपने पांच हजार चरण की तेज युद्ध उड़ा बाली थी।

एक तो रघुवर प्रवास, दूसरे बुधवार, तीसरे वसंतव्रत, तीनों ने रघुवर प्रवचन किया। गया आपने पांच हजार चरण की तेज युद्ध उड़ा बाली की।

दिकारी राज्य में बनारस के राजा ईश्वरप्रसादनायकसिंह की वहन आप्त थी। इसी से यह बनारस में उक महाराज के कुश्चि वर्ष बाद हुए। इसके बाद लखनी बनकर दफ्तर में हुई। आपने पस्तका बनकर दफ्तर में हुई। इसके बाद लखनी बनकर दफ्तर में हुई। इसके बाद लखनी बनकर दफ्तर में हुई।

लखनी की कल्पनाशक्ति जिन्होंने अद्वैत थी। इसी से यह बनारस में उक महाराज के कुश्चि वर्ष बाद हुए। इसके बाद लखनी बनकर दफ्तर में हुई।

लखनी की कल्पनाशक्ति जिन्होंने अद्वैत थी।
चन्द्रकान्ता
उप्योग
पहिला हिस्सा
पहिला व्याख्या

शाम को बताक है, कुछ कुछ गुरूर दिखाई दे रहाहै, तुमसार भैदान में ऐसा पत्र को नीचे दो शब्द वीरेन्द्रसिंह और तेजसिंह एक पत्र की चट्टान पर बैठे आपस में कुछ बातें करे रहे हैं।

वीरेन्द्रसिंह की उम्र इक्कोस या बाईस वर्ष की होगी। यह नीमड़ के राजा सुरेन्द्रसिंह का एक बच्चा है। तेजसिंह राजा सुरेन्द्रसिंह के दीवान बीजसिंह का पता लगा और कुंभर वीरेन्द्रसिंह का दोस्त, बड़ा चालाक, फूतिला, कमर में सिंफल बच्चे, बल में बढ़ना लंबकरे, हाथ में एक कमल लिए, बड़ी तेजी के साथ चारों तरफ देखता और इनसे बात करता जाता है। इन तेजियों के सामने एक बाहोन का कस्ता कस्ता दुसरे पेड़ से बंधा हुआ है।

कुंभर वीरेन्द्रसिंह कह रहे हैं, "भाई-तेजसिंह, देखो मुहूर्त भी कपड़े बुरी बता है जिसने हम वहाँ तक पहुँचा दिया। कई श्री श्री पुरुषव्रतमार जाकर राजकुमारी चन्द्रकान्ता की बीटी मेरे पास लाये और मेरी बीटी उन तक पहुँचे जिससे गान मालूम होता है कि बिना मुहूर्त में चन्द्रकान्ता से रखता हूं उसकी ही चन्द्रकान्ता मुम्बे से रखता है। और हमारे राज्य के उसके राज्य के बीच सिंफ अति ही कोस का फासला भी है। तथा पर भी हमलोगों के किन्तु कुछ नहीं बन पड़ता। देखो इस लक्ष में भी चन्द्रकान्ता से यही खिता है कि विस तरह से बने बने बने बने बने।"

तेजसिंह ने जवाब दिया, "मेरे हर तरह से आपको बाहर ले जा लक्ष्य है मगर
दूसरा व्याख्यान

विजयगढ़ में कृष्णसिंह के जन्तु नासिम और अस्मद दोनों ऐयारों के साथ बैठा बात कर रहा है।

कृति। ऐयार के नाम नासिम, महाराज की तो यह ध्यान है कि मैं राजा होकर मन्नी के लंकियों को कैसे दमाद बनाएं, और बदन्तक्ताका बीत्रसिंह को बचाती है? अथवा कि मेरा काम कैसे किये? बायर सोचा जाय कि बदन्तक्ता को लेकर मान जाओ, तो कहीं जाओ और कहीं रह कर आराम कर? निर्देश कुछ ठगे जाने के लिए सीमाना का दरबार नियोजन ने किया? इत्यादि ऐयार बाबा का अन्य सब ने इसका साधन किया है। ऐयार वे बचना सभी मुख्य पवित्र नहीं जब तक कि मैं राजी होये मोहम्मदी की निरस्तता कर दूं।

"इस बार कि प्रभु, ऐयार का जन्तु नासिम और अस्मद के साथ बात करता है क्योंकि चपला ऐयार और बदन्तक्ताका की प्रतीक्षा है और बदन्तक्ता का जान से ये मानते हैं। विजय के बच्चे के रूप से भिड़ने वाला बहुत कोई नहीं है। इसमें ऐयार के दुश्मनों का चालकी कर कारीगर कर लौट तब ऐयार चलने के बारे में राय है। कहलो ऐयार तो नहीं कि भिड़ने वाले अभी काम करने को हमलोग आई ही निरस्तता हो जायें।"

बीरेश्व। जो मुलातबर समझते हुए, मुक्तके नानक तात्का का बरोदा है जिन्होंने तुम्हारी तात्का ऐयार दोनों का।

तेजसिंह। मुंगे यह भोज पता लगा है कि वाला हो मे कृष्णसिंह के दोनों ऐयार नासिम और अस्मद। वे दोनों हो जीवन का सब बनने कर रहे है। इस मुबार किस चालकी में जाने ये? प्रभु। उस बात कि यह नहीं था।

बीरेश्व। दुरकंत तो यह है कि मुंगे कृष्णसिंह का दोनों ऐयारों के फलक सारे बातों के बीए और वे लोग वातावरणीय निरस्तता की किसी में हैं, परंतु ये यह नहीं करते। उन अन्य जानों और किस तरह की बदन्तक्ता के रूप में निरस्तता का बदलाव करते?

तेजसिंह फॉरेस्ट उठ बढ़े आए और बीरेश्व को बड़े होंदे बैठक बिजयगढ़ की तरफ रखी हुई। बीरेश्व भी घोंघे को दर्शन से लौट उस पर सवार हुए और ऐयार के सिर की तरफ़ चले गये।

* ऐयार उसके फतहे है जो हर एक फन जानता है, शक्तिः बदन्तका और दौड़ा उसका मुख काम है।
चन्द्रकान्ता
हालचाल की खबर लेने जाते हैं क्योंकि यह शाम का वक्त बहुत असह्य है, चन्द्रकान्ता
जबर बाग में गया होगा और अपनी सही चप्पल से अपनी विश्व कहाँ गई होगी,
इसलिए हमको इसका पता लगाना कोई मुश्किल न होगा कि भाकुल बीरेंद्रसिंह
और चन्द्रकान्ता के बीच में क्या हो रहा है?

यह कह कर दोनों एयर फ्लाइंग से बिहार हुए।

### तीसरा वचन

कुछ कुछ दिन बाकी है, चन्द्रकान्ता चप्पल और चम्पा बाग में ठहर रही हैं।
भानी भानी पूरी वे उसके मल्ल धीरी धीरा के साथ मिल कर तभी हो रहे थे।
तत्क तत्क के पूरे में हुए हैं। बाग के परिचालक के तरफ वाले शाम के बने
विभेद की बहार और उसमें बैठे हुए सुरज के किराये की चमक एक अन्नी ही
मना दे रही है। पूरी की ख्यातियों के रंगों में धीरी तत्क फिडकाया किया हुआ
है और पूरी के दर्शन भी फलकी तत्क पानी बोध कर हुए हैं। कहीं गुजार, कहीं जूह,
कहीं केक्स, कहीं मोटिव की फैक्ट्री धीरा धीरा मना दे रही है।
एक तरफ बाग से सत्र हुआ झाँचा महल और इसके तरफ सुदर सुदर दुहराया प्रभावी बहार दिल्ला
रही है। चम्पा जो चालाकी के जन्म में बड़ी तेज और चन्द्रकान्ता की चप्पल सीखी है
सपने चंचल हावाएं। के साथ चन्द्रकान्ता को संग लिए चार धीरा धीरा धारक हो रही है,
उसे तो दिल बहाने के लिए उसकी तस्वीर ज़बरदस्ती बाग में बचे नाही है।

चन्द्रकान्ता की सवीची चम्पा तो गुज्जर बनाने के लिए पूरी की रखें, अति
लता के कुछ कहती चली गई लेकिन चन्द्रकान्ता और चम्पा धीरे धीरे ठहरी हुई
बीच के पौधों के पास जा निकली और उसकी चक्करदार टुटी गई, निकलते हुए
जन का तमाशा देखने लगे।

चम्पा* न मालूम चम्पा किचर चली गई!
चन्द्रकान्ता* कहीं इतना उजर धीरा धीरा हो।
चम्पा* दो खड़ी हो जयदे हुआ कि हम लोगों के साथ नहीं है।
चन्द्रकान्ता* देखो यह बात रही है?
चम्पा* इस बात तो इसकी चाल में फार मालूम होता है?
इसमें बच्चे ने धाकर पूरी का एक गुज्जर चन्द्रकान्ता के हाथ में दिया और
चकलकता
नकतीचा चमा चपडा के फेर में पड़ गई और फौरन कान सूजने लगी। चपला चालानी की बेद्दोजी की डुंकी कान में रख कर नकतीचा चमा को सुनाया दिया जिसके सूजने ही चमा बेद्दोजी होकर गिर पड़ी।

चपला ने चकलकता को फुकार कर कहा, “आमो, सबी हमारी चमा का हाल देखो।” चकलकता ने पाला पाकर चमा की बेद्दोजी पड़ी हुई। देख कश्वा से कहा, “सबी कहते ऐसा न हो फि तृषा खपल दोला ही निकले और पड़ी, चमा से शरणा पड़े।” “नहीं ऐसा न होगा!” कह चपला चमा को पीठ पर लाय बोसे के पास ने गई और चकलकता से बोली, “तृषा बेदोजी के निकल भर बनी इसके मुंह पर बाल, में बोसी हूँ।” चकलकता ने ऐसा ही किया और चपला सूजन रख रखर उसका मुंह दोले लगी। बोली देवि में चमा की दूसरी सब गई और सारी नाजिम की सूजन निकाल बाये। देखते ही चकलकता का चेहरा गुस्से से नाल हो गया और बह बोली, “सबी इससे तो बड़ी बेदमबाड़ी।”

“देखो तो भाग को करती हूँ!” कह कर चपला नाजिम को पीठ पर लाय बाग के एक कोने में दे गई जहाँ तुम्हारे के मी-एक धोना सा तहतवाहा था। उसके पाने बेद्दोजी और नाजिम को ले जाकर लिटा दिया और ब्रांचे ऐतिहास के बहुत में वे मोमबत्ती निकालकर जबाई एक रसी से नाजिम के पार और दोनों हाद सो पीठ को तरफ खुब कस कर बांधे, और ब्रांचे से लखवाले उसको सुंधाना। चिंचोते नाजिम ने एक छींक मारी और चमा में आकर देखने को देख और बेवस देखा।

चपला को लेकर बह गई और चमा चाल गुलिया।

“चमा करते, मुस्कर बढ़ा फुकर हुआ, बाल में ऐसे कहते न कहते बल्कि इस काम का नाम भी न लूंगा।” इसीलिए कह नाजिम चिल्लाने और रोने लगा, चमा चाल चमा गुलिया थी। लेकिन जाना ही चमा और बोले, “चमा कर, ब्रांचे तो तेरे पीठ की चुकी मिही न भरो।” उसी क्यों चमा का धुसर बनी और चमा का हिंसा की धुंध बनी। चमा के नीचे ब्रांचे और चमा के लाख के बचे जाने के लिए पहुँचे देख देखने के लिए ही निकाल बाये।

चपला ने कहा, “भाग कर चमा, यहाँ छोड़कर चलो!” चमा ने तक कि चमा लगभग हवा बनी बुझे, जब पास ने चकलकता के कहा, “सबील इसकी निगमन करो, में चमा को हुई ताकत हूँ, कहते यह पानी सूजन नहीं कहता हूँ।”

चमा को धोरते हुई चपला मलाटी-लता के पास पड़ी और बाल कर दूसरे गई। देख कि समुच चमा एक घायल में बेद्दोजी पड़े हैं। और बदन पर उसके एक लटा भी नहीं है। बलवान संघर्षक हो चमा और पुछा, “क्यों मिजाज कैसा है, लाग ही गई बोला।”

चमा ने कहा, “साना भय मालूम था कि इस समय यहाँ ऐतिहासियों नहीं हैं। इस जगह इस्लाम का एक ध्वंस पड़ा था जिसको इस्लाम ही में बेद्दोजी हो गई, फिर न मालूम कहा था। अब, न जाने किसने गुलिया बोला, मेरे कादम मे उतार ले, बह लाम के कहते थे।”

बह ने चमा के कहाँ पड़े हुए देख जिनमें से हो एक लेकर चपला ने चमा का बदन धका और बच यह कहे के कि मेरे साथ मे उसे दिखाएगी जिसके तात्कक है! बचा का नाम उस समय बह जा जाए यहाँ चकलकता। और नाजिम थे। नाजिम की तरफ इस्लाम के धरार के चमा ने चमा से कहा, “देख इस ने तेरे साथ तुम मलाटी की है!” चमा को नाजिम का सुनाने ही बड़ा गुस्सा आया और बह चपला से बोली, “बहन, ब्रांचे इजाजत दो तो में भी दो आर कोड़े लगा कर धमा गुस्सा निकाल बुझे!”

चपला ने कहा, “हां हां, जिजिना जी चहाँ हुई मुस्कर जूतियाँ लगाये।” बस कह कर बाये, चमा ने मनमाने कोड़े नाजिम को लगाये, यहीं तक नाजिम पड़े उठा और बी जी फेंकी चमा में कहते लगा, “बुझा जूतीबाँ से कार तरह जिसकी बदलते ही वह हुई है।”

चमा ने चमा को जीवन के तानत निकाल लेकर तीनों महल की तरफ रुकना हुई। यह छोड़ा और बार जिसमें सत्य बार बहुत हुई, बाद में संच सटहुआ उसके पीछे की तरफ पहुँचा और बार कर देखते ने टले और हुई लागे के लिए ही बनावा गया था। इसके बारे कर फसलमानों का धराठाहर ने के सबब
पहिला हिस्सा

के सामने लाये। तेजसिंह ने कहा, "तुम लोग मुनाफाश, फिर मैं भी ले लूंगा।"

बाबु ज़ुकुड़ाने लगा और साथ ही गये भी उठाने लगे।

जोड़ी ही देर में सब चोबरार और पायों का सर धूमने लगा, यहाँ तक कि मृदुले मुक्ते सब बृहत होकर फिर पड़े और बेहोश हो गये।

बाबा का था, बड़ी ब्राह्मणी से तेजसिंह कराके के ब्राह्मण दिया गए और नजर बाग में पड़ी। 

हैसियत का हाथ में रोशनी लिए साथने से एक लड़ी जाती बन रही है।

तेजसिंह ने फूटी से पास जाकर उसके गले में कमाद डाली और ऐसा मटका दिया कि वह चू होकर न कर सके और जमीन पर फिर पड़ी।

तुरु उसे बेहोशों की अन्य लड़ाई और जब वह बेहोश बने गई उसे बड़ी से जुटा कर किंग्रेस ले गये।

बुद्धे में देर क्षमाकृत में साथी ज़ुकुड़ाने और साथने अलग बटन स्वाति सर्व साथी के बैठे बनते, उसके बाद उसके चोड़ उसकी कड़ाई पड़ी महल की तरफ गया हुए और वहाँ फूटे ज्ञात चंद्रकान्ता चंद्रा और चंद्रा देव पूछे लोड़ीयों के साथ एक बैठा कर रही थी।

लड़ी का सुरु बने हुए, तेजसिंह भी एक फिरने का बढ़े में।

तेजसिंह को देश कपला बोली, "बाबा, क्या वैदिक, जिस कामों के लिए मैं उनको भेजा था क्या वह काम कर आई बी यहाँ, बाबा के हाथ गया है?"

चंद्रा की बात गुन तेजसिंह को आलू हो गया कि वह लड़ी को मैं बेहोश किया था या जिसकी सुरु बन कर डाला हुआ उसका नाम केतक है।

नकली केतक। हैं। काम करने तो इसी ही थीम समय रातों एक नया लोग महल देश तुरु गये कहने के लिए बैठे बाहर गई।

चंद्रा। ऐसा! व्यक्ति तेंदु बैठा कह?

नकली। कैसे?

चंद्रा। सभी को हटा दो तो तुरु हो और राजकुमारी के सामने बात कह गुगाना।

सब लड़ों। हटा दी गई और बवाल चंद्रकान्ता चंद्रा और चंद्रा रह गई,

तब केतकी हें। हम, "हूँ हुत न कि दो चंद्रकान्ता सुनाता।"

चंद्रकान्ता ने समझा कि तास यह हूआ तेजसिंह की बाबा बाहर है। मगर फिर वह भी बोली कि मैंने तो बाबा के हाथ बबाक का नाम भी इसके सामने नहीं दिया तब अधम मामला है? कोई ही चंद्रबीर कर सकता है जिसके सुनने के लिए यह पहिले ही से है। बाबा हूआ, तो कह तो वही क्या बुधवारी लाई है?"
चन्द्रकान्ता

केटकी ने कहा, "पहले दे दो तो कहूँ नहीं तो जाती हूँ!" यह कह उठ कर कहड़ हो गई।

केटकी के ये नशे देख चला से न रहा गया और बहु बोल उठी, "कोई रे केटकी, आज तुमसे क्या हो गया है कि ऐसी बड़ी बड़ी के बात कर रही है। लगा जो दो लात उठ के।"

केटकी ने बवाब दिया, "क्या मैं तुमसे कमजोर हूँ जो तू मात कमजोर और मैं छोड़ हूँ?

अब तो चला से न रहा गया और केटकी का भोंट पकड़ने के लिए दोहरी यहाँ तक कि दोनों आए पुरूष में गुज गई। इसीसे था चला का द्वार नली केटकी की छाती पर जा पड़ा यहाँ के सपाइ के देश वह अचूक उठी और भट लगी हो गई। नली केटकी। ( हंस कर ) क्यों भाग क्यों गई, प्रबोधन लहो। चला कर से काटर निकाल समायार हुई और बोली, "आई एली, भाग बता तू कौन है नहीं तो भ्रष्ट जान ने बालाट हूँ।"

इसका भवाब नली केटकी ने चला का कुछ न दिया और बीरेश्वर ने बीती बीती निकाल चन्द्रकान्ता के सामने रख दी। चला की नजर भी इस बीती पर पड़ी और गोर से देखने लगी। बीरेश्वर का हाथ की दिशा देखे तुमसे गयी तो वे तेजसिय हैं काफिल सियाव तेजसिय के बीते किसी के हाथ बीरेश्वर कभी बीती नहीं भेजी। यही चोट समय चला समय गई और गद्दी नीची कर हुई गयी मार जी तेजसिय की सपाइ और चला की तारीफ करने लगी बलिक सच तो यह है कि तेजसिय की गुरुवार ने उसके दिन में जब दाख लग रही।

चन्द्रकान्ता ने बड़ी मुखब्यांत से बीरेश्वर का खट पड़ा और तब तेजसिय से बालाट करने की—

चन्द्रकान्ता ने कोई तेजसिय, उसका मिछाज तो ब्रजा है?

तेजसिय। भिजाज का खट ब्रजा है? ब्रजा में सब छूट गया, रोटे रोटे प्राण भूल गई, दिन रात दुर्गापूजा ध्यान, बिना तुम्हारे बीते उसका कह अधार है। दुहरा समायार हुई मार नीचे सुनी है, ब्रजी उसी दिन तुम्हारे बीते लेकर में गया था, आज उसके हालत अचूक हुई और आज जब हो आजिक मिले यहाँ को कहा और कहा कि आज अब हो जाने दो, मैं जाकर वहीं बन्दरोल कर आकू तब तुमसे ले नियम जिसमें किसी तरह का गुकानन न हो। और किसी तरह समय गई और तुम्हारी बीती
पहिला हिस्सा:

"बेदों के पीछे से ब्रज की जानकारी, जो एक नागरिक सरकारी विभाग ने निर्देश दिए तथा जहाँ रहने के लिए विभाग का विश्वास करने की आवश्यकता है, उसे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है। यहाँ जो नागरिक सरकारी विभाग ने निर्देश दिए तथा जहाँ रहने के लिए विभाग का विश्वास करने की आवश्यकता है, उसे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है।

तब सरकारी विभाग ने कहा कि वे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है। यहाँ जो नागरिक सरकारी विभाग ने निर्देश दिए तथा जहाँ रहने के लिए विभाग का विश्वास करने की आवश्यकता है, उसे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है।

पांचवां व्याख्या:

प्रहरदेव ने ब्रज के एक पेड़ पर बेटा हुआ था जब वे विभाग के निर्देश कर दिया था राज्य में विभाग के लिए विभाग का विश्वास करने की आवश्यकता है, उसे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है।

तब सरकारी विभाग ने कहा कि वे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है। यहाँ जो नागरिक सरकारी विभाग ने निर्देश दिए तथा जहाँ रहने के लिए विभाग का विश्वास करने की आवश्यकता है, उसे इस लोगों को वहां हाल ही हो एवं उससे भी हवा आती है।
चन्द्रकांता

वे दोनों प्रामुख में धीरे-धीरे बात करते चले जा रहे थे। ठोसी देर में जब महल के बाहर दिखाई देने पर वह देखा कि केतकी को कुमारी चन्द्रकांता की ठीकी है सामने ले चली आ रही है।

तेजसिंह ने भी जो केतकी के साथ में चले जा रहे थे। नज़ीम और शहीद की देखते ही पहुँची लिया और सोचने लगे कि भले भी कोई पर ये दोनों मिल गए हैं और अपनी भी सुरत बनानी है, इस समय इन दोनों से कुछ सेह लगना चाहिए और बन चढ़े तो दोनों की नहीं तो एक को तो जहां तक पहुँचा चाहिए।

तेजसिंह जान इसके इन दोनों के पास से होकर निकले। नज़ीम और शहीद भी यह लोककर उनके पीछे हो लिए कि देखे कहाँ जाती है। नकली केतकी (तेजसिंह) ने फिर कर देखा और कहा, “तुम लोग मेरे पीछे पीछे करो चले भाई रहे हो। तुम्हारा काम है उस काम को करो!” शहीद ने कहा, “किस काम पर मुकरंगा है और क्या काम करें? तुम क्या जानती है?” केतकी ने कहा, “मैं सब जानती हूँ।” तुम्ही काम करो जिसमें चपले के आय की जूतीया नहीं हो। इस जगह तुम्हारी बदनदरा एक तीनी तक नहीं है वहाँ तुझी फिरे काम होगा।

नज़ीम और शहीद केतकी की बात चुना कर देख सोचने लगे। कि यह तो बड़ी चलकर मालूम होता है, भाग हम लोगों के मेल में भाज़य को बड़ा काम निकले और इसकी बातों से मालूम भी होता है कि कुछ लोग देने पर हम लोगों का नाम बनें।

नज़ीम ने कहा, “युगल केतकी, हम लोगों का तो काम ही चलकर करते है। हम लोग भाग करके जाने और अन्य हरे से हटके रहे तो कभी काम न चलें। हम की पैदा होती है, बात की मेल में हजारों लोगों ने तय किया है। हम लोगों का नाम होता है। भाग का, जिसमें हम सब हमारी नैसर्गिक विशेषता है कि हमारी मदद करो, जो कुछ हम किया उसमें हम लोग भी हिस्सा देंगे।

केतकी ने कहा, “युगल, मैं उम्मीद के अधिक जाने वाली नहीं हूँ, वे कोई इससे होंगे, मैं तो पहले लेकर काम करती हूँ। वह इस बड़ा भाग कुछ मुश्किलों के तो मैं यहिर्तेजसिंह की तुझी धारा देखा परिस्थिता कररू है नैसर्गिक न जाने जो कुछ करते हो करो।”

तेजसिंह की परिस्थिति का नाम मुझे ही इन दोनों का लड़ाई कहा हो गया।

नज़ीम ने कहा, “अगर भाग तेजसिंह की पकड़ पर जो कही हम तमकी दें।”
पहिला हिंदी पीठ पर एक गद्दर लादे बा पारग. पहले बाले इस हालत में इनको देख हुई रहे से मांगी मे हुई कह नहीं कहते थे। तेजस्वि है वीरेन्द्रसिंह के बनर्जी में पड़ते कर देख बच्ची के तक यह भाग बढ़ रहे हैं। वीरेन्द्रसिंह तेजस्वि को देखते ही उठ बढ़े हुए और बोले - "कहो मार कह बच्चा कहर के कहर का बख्शा लायें?"

तेजस्वि ने बच्चे का बख्शा सुनाया। चन्द्रकान्ता की चौंकी हाथ पर रख देने की छात्रा की बाल की बाल के दिखा दिया और कहा, "यह चौंकी है, और यह सोगात। वीरेन्द्रसिंह बहुत बुरा हुए। चौंकी की तले मत पक दें बर्बर से लगाया कि तेजस्वि के साथ, "झुटी मार इस बख्शा की ऐसी जगह रखते थे। किसी को मारने हो, जब जयस्वि का बाल लगाये तो फसल बड़ा बढ़ जायेंगा।"

तेजस्वि है। इस बाल को में पड़ते से सोच चुका हूँ। में इसको एक पहले में रख देते हूँ जिसको में ही जानता हूँ।

यह कहकर तेजस्वि ने किया बिस्मल्लाह की गाँवी बाँधी और एक पाये को चेहरे के चेहरे देवीसिंह को बुलाया कि तेजस्वि का शामिल, दिनी बोलते, धीरे दींठे में साना भी लगाया था, तथा बुलाया के फन में भी तेजस्वि से फिस्को तरह का न था। जब देवीसिंह भी गए तेजस्वि ने बहुत की गाँवी बाली पीर पर लौट और देवीसिंह से कहा, "आपकी हमारे साथ चलो, तुम्हें एक काम है।" देवीसिंह ने कहा, "गुजरू, यह गाँवी दुर्गों में ले चलो, मेरे रहे यह काम आपको बचने में है।" बालिका देवीसिंह ने बहुत मार बाली पीर पर नाद की तरह और तेजस्वि के पीछे बाली करते।

ये दोस्तों शहर के बाल को जुड़ते देवीसिंह और दर्दो में मृत्युभावे। एक बृहस्पति रातों से जारी जाते दो कोष के करीब पड़ते कर एक बालीयों में खुदे। बालीयों बचाने के बाद कुछ रोशनी सिली। यहाँ हाकार तेजस्वि बर गए और देवीसिंह से बोले, "गाँवी रख को?

देवीसिंह। (गाँवी रख कर) गुजरू, यह तो भाजी जगह है, बाल में जीने की तरफ नहीं गांवी और कोई भी भी नहीं सकता, बाल में बाली भी तो यहाँ से जाना मुश्किल हो जाय।

तेजस्वि। मूर्खो देवीसिंह, इस जगह को मेरे द्वारा कोई भी जानता, तुम्हारो भावना दिनी बोलते समय कर ले आया है। तुम्हें बाली बढ़ता कम करता होगा।

देवीसिंह। मैं तुम्हारा तात्क्षण में, तुम गुजरू ही क्योंं ऐसीत तुम्हारी किस्मत है, बाल में जाना की भी जरूरत पड़े तो मैं देंगे को तैयार हूँ।

चौ १-२
देविसिंह । गुप्ति और में जो बातें तुझे कहता हैं उसको श्रद्धा तरह स्पष्ट
कहना। यह सामने जो पत्रका द्वारा देखता है इसको कहाना सिवाय मेरे कोई
भी नहीं मानता या फिर मेरे वृत्तांतसिखाने मुझको ऐसा दिखाई देता थे।
वे तो कहना हैं नहीं मर गए, इस समय सिवाय मेरे कोई नहीं जानता और मुझे
इसका कहता बताया देता हैं । जिस विश्व के में एक कर लाया कहना इसी
ज्ञान लाकर वैद फिर तिसमें किसी का मालाम न हो और कोई छुड़ा के भी
चला जा सके। उसके नाम फैलने से वैदियों के, हाथ पर बांधने की जितनी
बढ़ती, जितने हिरासत के लिए एक सुनाती बेची उनके पैर में दान देनी पड़ेगी
जिसमें वैदियों की धारा कर नहीं सकें। वैदियों के बाहर बिने की भी फिर
कुछ नहीं लगती क्योंकि इसके होशर एक छोटी सी कुदरती नहर है जिससे बरसात
पानी रहता है और बेदों के दर्शन भी बढ़ता है। इस इयाद को इसी में बढ़ाते,
बाद इसके महाराज सेपहबादहान कर के भाग जल्द में दोहरा गई है और एक
बड़ी की खुशियोंसिखाने पाठविया महाद बाध्य, महत्ते में की छिट्टी लेती।
उसे वैदियों के लुप्त हुई विदा हुई। तब हमें बढ़ाने विषयाक बाध्यों का
बहुत कर उसके को प्रदर्श कर घर के लूट कर जाने की कच्ची किया, जो कुछ
हाय हो मुखते कहा करो, और जब भीका देखो तो बदमाशों का प्रतिकार करने
इसी ज्ञान ला उनको तैयार करो, भी कर दिया।

भी भबत सी बातें देविसिंह की समाजने बाद तेवसिंह द्वारा लोटने
चले। दविने के उपर एक बड़ा सा टेक्टोर का बना हुआ था जिसके मूंह में
छाया बुझाया जा सकता था। तेवसिंह ने देविसिंह से कहा, “इस चेहरे के मूंह में
चाहे हाय बालको इसी कुछ बाध्य की लिंगी।” देविसिंह ने बसा ही किया और हाय
भर के करीब बीजें बाध्य है। उसके लूटे ही एक द्वारा बाध्यी और दविने
छुटा गया। अभिनंदन की फैल कहा हुए दोनों बनाइया। देविसिंह ने देखा कि
छुटा बुझाया जाय, बिचार को करके भी जाना में, शरीर के करीब जाने के लूट
से काफी मोहाबत नजर होती है। अभिनंदन की फैल कहा हुए दोनों बनाइया।
देविसिंह ने देखा कि छुटा बुझाया जाय बिचार को करके भी जाना में, शरीर के करीब जाने के लूट से काफी मोहाबत नजर होती है। अभिनंदन की फैल कहा हुए दोनों बनाइया।
सातवां व्याख्या

श्रद्धालु के कस्तो जानिये से नाजाम बहुत उदय हो गया और कृत्रिम को तो खाली है फिक वह गई कि किसी तेजसिंह मुकुट की न पकड़ ले जाय। इस लोक से बहुत हुमान उहाँ रहता था, मगर महाराज ज्योतिष के दरबार में रोज जाता और वीरेश्वर की तरफ से उनका मनुष्य करता।

एक दिन नाजाम ने कुरूक्षेत्र को यह सतह दी कि जिस दिन हो सके अपने बाप कुरूक्षेत्र की मार डाले, उसके बाद अपनी जाता तुम्हारी स्वतंत्रता हुमादत हो जाने से सब काम बहुत ज्यादा होगा। श्रावकर कुरूक्षेत्र ने जहाँ डिलाया कर अपने बाप को मसाला डाला। महाराज ने कुरूक्षेत्र के मरने पर अनोखी दिया और कई दिन दबर में न वाह, शहर में मी कुरूक्षेत्र मनी के मरने का गम गया।

कुरूक्षेत्र ने जाहिर में अपने बाप के मरने का बहुत भरी मातम (गम) किया और बाहर रोज के बाल्क कित्ता जमाया। दिन नर तो अपने बाप को रोज पर रख को नाजाम के साथ बैठ कर जनपद के मिलने तथा तेजसिंह और वीरेश्वर की गिरतार करने की फिक करता। इस्ती दिनों वीरेश्वर ने भी शिखर के बहने विभाग की साधन पर नेमा डाला डिया था, जिसके खाब नाजाम ने कुरूक्षेत्र को पहुँचाया और कहा—'बीरेश्वर जहाँ जनपद की फिक में गम हो गया। जयसिंह इस समय बहुत न भूली तो बदल काम निकाला, बैर देख जायगा।’ यह कह कुरूक्षेत्र से बिहार हो बालादेशी* के बाले बतला गया।

तेजसिंह बीरेश्वर से संसार हो बिजयगान बढ़ाने और मनी के मरने तथा शहर में गम जाने का हाल लेकर बीरेश्वर के पास लौट आये, यह भी खाब लायें।

* बालादेशी—दोहे लेने के लिए गए करना।
जाकर बातें कर गायक तब भाषकों के लिए। यह वह उसी पेड़ के तीनों छोटे उस जनान गए, वहीं जनन्व बच्चा और बच्ची बैठी थी। तेजसिंह को देखते ही जनन्वा बोली, "कैसा जी, इतना दिन कहाँ कहा? कब इसका नाम मुरीदः है? बच्ची भी बात में भर्ती ही बात! वहाँ, ऐसा ही था ये हाम में भूल कहते। जवांवर्क की विजय दिखाई नहीं हैं। जब उनकी मृत्यु कहाँ हाल है तो जी कर बात कहनी?") कह कर उन्हें रोना लगा, वहीं तक कि छिपके बेखौफ़ गई।

जनन्वा उहसक यह हालत देख बहुत भक्ति बोले, "बच्ची इसों नादानी कहते हैं? बच्ची तरह हाल भी न चुप और पति रोना, ऐसी ही है तो ये में भी उनके लिए बात है।"

यह कह कर तेजसिंह वहीं गए, जहाँ बीरेश्वर सिंह को छोड़ा था और उनको भागने साधे लेने जनन्व के पास ले। जनन्वा को बीरेश्वर सिंह के मतलब से बड़ी खुशी हुई। दोनों मिलकर बुखा रोए उहसक तक कि बेहोश हो गए। मार बढ़ी देख बाद हो गया था ये बात। जनन्वा में चिकित्सा भी मरीय मृत्यु की बात करने लगे।

बच्चकों के उदार फेहे देखी। वृषभपुरी जाना गया तापमया भी उसी जनन्वा भाग और हृदय से इन समय की छुटी मरीज गद्दे कर गई।

भतर हो लोट कर कृष्णसिंह के पास पहुँचा। कृष्णसिंह ने तापमया को चबड़ाना हुआ। देखा और पूछा, "कैसा था जो जुम इतना घबराए हुए हो?

नामिना। है क्या, जो में सच्ची था वहीं हुआ। यहीं कत चाली कर है, सारा भी जुड़ा बन न पड़ा। तब बुढ़हरी चिकित्सा फूट गई, ऐसी ही एकमात्र प्रभुः।

कृष्णसिंह। बुढ़हरी बातें कह तुम समय में नहीं मानीं, बुढ़हरी कहां कार बात है?

नामिना। बुढ़हरा बस यही है कि बीरेश्वर सिंह के पास पहुँचा गया और इस समय बाग में हीं सुखी के छोड़ा उह रहे हैं।

यह मुल्कों ही कृष्णसिंह की श्रेष्ठों के नाथों के नाथों थे या थे, उत्साह अलालों में घिरे, कहाँ ते बाग के जातीयों गाम में वह सर मुझे बसती में एक सुखी बैठा था, तेजसिंह कहीं बाहर जाना हो नहीं सकता था, मार बढ़ा ने उनको भागने में न रहने दिया। कहा उठा फूट गया और उसी तरह अंदर भी थी सारे हो सर कर महाराज जम्मूसिंह के पास पहुँचा। जयसिंह कृष्णसिंह की इस तरह बातें देख हैरान हो गये, "बुढ़हरी, सुकन और बांध का गम छोड़ कर
चन्दकान्ता

पुस्तका इस तरह भाषा मुमके हैरानी में बांट रहा है?

कृपसिंह ने कहा, “महाराज भाग से बाप तो भाय है, उन्होंने तो पैदा किया, परवरिष्ट भाय ही की बवाल तो होती है। जब भाया की इजहार में बड़ा लगा तो रानी जिसपर किस काम की है और यह में किस लायक मिला जाएगा?”

जयसिंह। (पुस्तके पावकर) कृपसिंह, पत्नी कौन है जो हृदयारी इजहार बिखारता?

कृपसिंह। एक ब्राह्मण जाती?

कृपसिंह। (दांत पीस कर) जल्दी बताओ यह कौन है जिसके सेर पर मोटे बनाता हूँ?

कृपसिंह। ब्राह्मण?

कृपसिंह। उसकी बात मुझे भर भर बीमारकर, इजहार बिखाराना तो बहुत चीज है। मुरे तुम्हारी बात कुछ समय में नहीं आती, साफ साफ जल्द बताओ क्या बात है?

कृपसिंह।

कृपसिंह। अभी बाहर के बाहर में?

यह गुस्से में हृदयारा का बनते मारे गुस्से के कौन लगा। तड़प कर हुकम दिया, “भांती जाकर बाग को घेर लो, मैं कोट की राह नहीं जाता हूँ!”

आठवां क्षण

ब्रिजसिंह चन्दकान्ता से भीती भीती बात कर रहे हैं, चबला से तेजसिंह उलझ रहे हैं, बग्गा बेचारे इन लोगों का मूंग ताक रही है। अत्यन्त एक काला कुट्टा भागानी, निंदे से पैर तक भागानी का कुट्टा, लाल लाल बाबा, तेजसिंह के, उसका कुट्टा इस समस्त के बीच में भा लड़ा हुआ। पहले तो उस तीसरे के दांत बोल तेजसिंह को तक दिखाऊा, तब बोला—“सबर यही राजा को तुम्ही गुस्से में पड़े!” इसके बाद उसका कुट्टा चला गया। जब तो राजा की टांग फक्त घोंघी दूर, घोंघी दूर, घोंघी दूर दिखाई दिया। यह देख भाग गया हो गया और बड़े तो यह पिसाय कहा था यह गया, चबला बेचारे तो मिला उठी, मगर तेजसिंह फोरन उठ के बड़े हो और ब्रिजसिंह का हार पड़े के बोले, “बहु जल्दी उठे, ज़ब बेठे का मौका नहीं!” चन्दकान्ता को तरफ देख कर बोले, “इन लोगों के बेंती के जाने का रंज तुम मत करना और जब तक महाराज यहाँ न आते ही तत्काल सब बेठे रहना!”

चन्दकान्ता। इतनी जल्दी करने का सबब क्या है और यह कौन था जिसकी रात सुन कर भानाना पड़ा?

पालिका हिस्सा

तेज। (जंदी से) रात्रि बात करने का मौका नहीं रहा।

इस कर ब्रिजसिंह की जवाबदेही उटाया और साफ लेने के कारण बाहर हो गये।

चन्दकान्ता को ब्रिजसिंह का इस तरह चला जाना बहुत बुरा मालूम हुआ।

राजा में अच्छी भी चला जाना, “यह क्या तामासा हो गया कुछ समय में नहीं आता। उस विजय को देख कर मैं केवल अर्धे, वे क्यों कर लेकर देखो भ्रानी तक हड़कड़ा रहे हैं! तुमने क्या बयाल किया?”

चबला कहा, “कुछ धीरे समय में नहीं आता, हाँ इतना जबरा है कि इस समय ब्रिजसिंह के यही बातें की लबर महाराज को हो गई, वे बहु हायत हैं।”

चबला बोली, “न मालूम मुरे को मुस्से क्या दुरसमी थी!”

चबला की बात पर चबला को हंसी भाग गई समय है कि यह क्या लेल हो गया। भीड़ देर तक इसी तरह के ताजुब भरे भरते होती रहीं, इतने में ही के चारों तरफ आभायों के शोधन का भ्रानारा आने लगा। चबला ने कहा, “रक्षक बुरे नजर बाचने लगे, मालूम होता है कि इस बात को सिंहावंद्वियों ने घेर लिया। बात पूरी भी न होने पाई थी कि सामने से महाराज आते दिखाई दें। देखते ही सब की सब उठ खड़ी हुई। चन्दकान्ता ने बड़ा कर पिता के आगे सिर मुक्ता और कहा, “इस समय आपके यकायक आने...!” इतना कहकर उभ रही। जयसिंह ने कहा, “कुछ नहीं, तुम्हारे देखने को जी बाहर इसी से बने बाये। वह तुम भी महाराज में जाओ, वहाँ क्यों सीटे हो, आया पहुँचे हैं, तबभी तुम्हारी बारत्न के पास नहीं।” यह कह कर महाराज की तरफ रौना लगा हुआ।
"चलिए महाराज ने बुलाया है!" कृसिंह चढ़ा उठा कि महाराज ने क्यों कुलाया, क्या चार नहीं मिला? महाराज तो मेरे सामने महल में बैठे गए थे! हरिस्थिन् से पुछा, "महाराज क्या कर रहे हैं?" उसने कहा, "भाई महल में गए हैं गुस्से में भरे बेटे हैं भाषको जबड़ी बुलाया है।" वह नुभूति हो कृसिंह की नानी मर गई, दर्ता कांता हरिस्थिन् के साथ महाराज के पास पहुँचा।

महाराज ने कुर को देखते ही कहा, "क्यों बे कुर! बेचारे चन्दकान्ता को इस तरह मूत्र भ्रष्टार्थ करना और हर्मारी जलन में बुरा लगाना यहीं तेरा काम है! यह इसने आदमी को बाग की गर्जे हुए हैं! अँग जो मेरे मते में क्या कहने होगा? नालाक, गदहा, पानी! तैना की कहा कि महल में बीरस्थिर है!"

मारी गुस्से के महाराज जयसिंह के होट कपड़े रख देंगे, बिस्तर लाने हो रहे थे। जैसे है कर कृसिंह की तो जान सूची हो, पवड़ा के बोला, "मुक्तिना तो यह जयसिंह ने बार गुस्सा रहा जो मार्ग काल महाराज के पहड़े पर मुक्तिना है!" यह नुभूति हो महाराज ने हुमस दिया, "बुलाया जयसिंह को!" थोड़ी देर में जयसिंह भी वाहसर विचार कि। गुस्से में भरे महाराज के मूर्ख से अपने आदमी नहीं लिखती थी। हूटे धूमे में जयसिंह से पुछा, "क्या बे, तैना की बाग लाने हुए!" उस वक़्त देर के मारे उसकी बाग हास्य बढ़ता जा रहा था, रात में नालाक हो डुबा था, दर्ता हुआ बोला, "मैं ठीक दिखाई है देखूँ, चारबाग शून्य तरह मंगा गया हो!"

"बाबा जयसिंह ने गुस्सा बड़हात हो सकता, हुमस दिया, "पत्ने कोडे कुर की ओर बी कोडे नालिम को कापात जायेंगे! बस इसे ही पर छोड़े देंगे हैं, आपने फिर चढ़ा ऐसा होना यह फिर उत्तर लिया जायेगा! कुर, तू क्या हो लानक नहीं हैं!"

"भाई कर यह, लगे ही तोड़ने कोडे पड़े। उन लोगों के नियम से महल गुज़ उठा मार्ग महाराज का गुस्सा न गया। जब दोनों पर कोडे पड़े याद हो, उनकी महसूल के बाहर निकलवा दिया और महाराज ब्राह्मण करते बारे गए, समार मारे गुस्से के रात में नींद न बाई।"

'कृसिंह और नालिम दोनों घर भाई और एक बाहर बीट कर लगे मारहुने। कुर्जी नालिम के कहने लगा--"तैना बैठने जाए नरी जलन में लिया गया। बाहर निकलते ही यह बाहर नहीं रहता, भाई बाहर उसकी तकलीफ में ही रहता है, यह सब तैना ही बड़हात हुआ।"' नालिम कहता था--"मैं तुम्हारी
हम दिखा। पिटने के पहले ही उस बदनसेवा ने बताया दिखा कि जुनार गए हैं।

महाराज जवरसिंह को कुर्सियाँ का हाल सुन कर जितना गुरुजा आया बचाने के बाहर है। हम दिखा—

(1) कृष्णसिंह के पर के सवे धीरत सिंह चले बाहे के हमारी सहायता के बाहर चले जाय।

(2) उसका मकान शूट दिलाया जाय।

(3) उसकी दोहर में से विचार दिखा श्रेष्ठका रामलाल उठे ले जा सके के जाए बाकी सरकारी बाजने में दाखिल किया जाय।

(4) रामलाल धीरत कुबुल करने ठीक जाय।

हम पाते ही सबसे पहले रामलाल कृष्णसिंह के पर पहुँचा। महाराज के मुख्य की जो हम की तारीख कर गया था रामलाल ने कहा, “पहले मुझे कोई दो कि उठाने जाएं और महाराज को शायद रख लें। इस जल्दी में, मुझे गरीब को मत सताएं!” मुस्ताफी ने कहा, “उसबाबा आदामी है, इसकी प्राणी नहीं पड़ी है! उहार जल्दी करना है!” तकरीबन रामलाल ने बिंदुला देकर कहा, “हराई महाराज की, मेरे लाये मुस्ताफी नहीं देता!” कहता हुआ महाराज की तरफ चला।

मुस्ताफी ने कहा, “लोगों जाते कहै, माफी पहिले इसको दें।”

रामलाल ने कहा, “हराई की, मैं बिल्ला नहीं तो सभी रुपये उठाकर जाए!”

इस पर रुपये पड़े। मुस्ताफी ने दो हुजार रुपये उठाये बगाये रखे और कहा, “ले ले जा!” रामलाल ने कहा, “बाह, कुछ यहाँ में हमारे ने का हुआ है? इतना तो मेरे जेब में जा जाएगा, मैं उठे के क्रोध में जाएंगा?” मुस्ताफी ने कहा, “उठा, नतीजा रामलाल की कर्ज बराबर उठाएं।” रामलाल ने कहा, “उठा देखे कि जीता उठाया है!” देखते देखते उसने हराई हुजार रुपये उठाये लिया, फिर भर, बृद्ध में कमर में, जेब में, भिछे पर की हुजार और भिछे में भिछे के रूप से भिछे दिखा और रास्ता लिया। रुपये हुकमे और कहने लगे, “आदामी नहीं इसे रास्ते समय नकाशा किया है!”

महाराज के हुम की तारीख ही गई, घर शूट दिलाया गया, धीरत सिंह रामलाल ने रोटे देखते हुजार का रास्ता फड़ा।

तेजसिंह लघु रूपया बीरसिंह के पास पड़े और बोला, “जाए तो मुनाफा कर लाए, मारंगा गया मारने शौचाला करा है, इसमें कुछ रुपये मे फिला दिए जिसमें पाक हो जाय!” बीरसिंह ने कहा, “यह तो सवेर कि लाए कहै से?” उन्होंने:
ब्रह्मचारी ने कहा, “जो कुछ मेरे पास यही है मैंने सब दिया।” लेखक ने कहा, “मगर यह कि इसका कारण न हो, क्योंकि इसका रचना उससे कहीं अधिक है!” ब्रह्मचारी ने कहा, “तो यह तक कहाँ से लाये?” लेखक ने जवाब दिया, “तमसुक्त लिख दो!” कुमार हंसपंडी और उनकी सेवकीय सहयोगी उत्तर के दे दी। लेखक ने शुष्क हो कर के ली और कहा, “ब्रह्मचारी आपको मुझे पूछ कर कराए। इसमें तो नौ धोनों की भी हड़ताल थी। पत्थर के बना बच्चों के बच्चों का बनाना नहीं कर रहा है।”

दसवां बयान

कृषिकेश की तबाही का हाल शहर भर में, फैल गया। महाराजी रत्नमया (ब्रह्मचारी की माँ) और ब्रह्मचारी इस समय ने भी सुना। कुमारी और पुतला को बही बुझी बुझी हुई। ब्रह्मचारी महाराज महल में गए हंसपंडी ही महाराजी ने कृषिकेश का हाल पूछा। महाराज ने कहा, “बहुत बढ़तावस्था बता दूसरा था, कुल में लड़की को बनाना कराया था।”

महाराजी ने बात चीज कर कहा, “आपने कोई सोच कर ब्रह्मचारी का धारा जाना मना कर दिया! देखिए, यह वही। ब्रह्मचारी है जो लड़का है, जब चंद्रमाता पाठ्य भी नहीं हुई थी, यहाँ धारा और कई कई दिनों तक मारकर था। यदि यह पैदा हुई तो दोनों बच्चों बटूर बनाते और होंगे सबसे पहले दोनों की धारा में मुख्यत्व भी भर गई। उस बच भी नहीं मालूम होता था कि पाठ्य और राजा सुरेन्द्रसिंह कोई दो हैं या नौ, माझबंद और विद्वान या तनाव भी है। सुरेन्द्रसिंह भी बसाता धारा ही के कहीं मुख्यत्व बनाते थे। कई इसे आप कह भी चुका थे कि चंद्रमाता की दारी के साथ कर देही चाहिए। इसे में मुख्यत्व और धारा के बनाते उस दुन हुए ने विज्ञान दिया और दोनों के चित्र में पैदा कर दिया!”

महाराज ने कहा, “मैं आप हैरान हूँ कि मैं भी बुझी को बनाया गया। मेरी समस्या पर पत्थर पड़ गये। कौन सी बात ऐसी हुई जिसके लिए मेरे हंसपंडी ने कृषि की मुख्यत्व बनाती है। हां, इस कूटर जी तो मना कर ही निश्चित। इसे भी जो रखा जाने पर घट मुख मालूम होता है!” महाराजी ने कहा, “जैसे धारा वह नौ ज्यादा ना बच्चा करता है? जब महाराज शिवदेव को उम्मीद और कोई नया बच्चा पैदा करेगा!” महाराज ने कहा, “कैसे देखा जायगा, परमेश्वर मालिक है, उस नालाके...
बारहवां व्यायाम

ब्रजेन्द्रसिंह और रजेन्द्रसिंह नामक के किले से बाहर निकल बहुत से आदमियों को साथ लिए चन्द्रमा नदी के किनारे बैठे शोभा देख रहे हैं। एकतरफ से चन्द्रमा दूसरी तरफ से करवाना नहीं बहुत हुआ आई है और किले के नीचे दोनों का संगम हो गया है। जहाँ कुमार और रजेन्द्रसिंह बैठे हैं नदी बहुत बीड़ियों है और उस पर